एक्सआईआईएसएस में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

March 8, 2025 Lens Eye News Comment(0)

राची, झारखण्ड | मार्च | 08, 2025 ::

ज़ेवियर इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल सर्विस (एक्सआईएसएस), रांची में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च को फ़ादर माइकल वैन डेन बोगार्ट एसजे ऑडिटोरियम में मनाया गया। इस वर्ष कार्यक्रम का थीम "सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए: अधिकार। समानता। सशक्तिकरण।"

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ जोसेफ मारियनुस कुजूर एसजे उपस्थित सभी को संबोधित करते हुए कहा कि कई बार ऐसा होता है कि हमारी माताएं, बहने, बेटिया और बीवियां जो घर में चूल्हा-चौका, बच्चों की देखरेख आदि करती हैं वह खुद मानती हैं कि मैं हाउसवाइफ हूं और मैं कुछ नहीं करती। क्योंकि वह कमाऊ नहीं है, वह बाहर जाकर काम नहीं करती। फादर ने आगे अपने संबोधन में बताया कि एक अध्ययन के अनुसार पुरुष औसतन जो एक दिन में काम करते हैं, महिलाएं उनसे प्रतिदिन एक घंटे ज्यादा काम करती हैं। लेकिन पुरुषों को कम काम करने के एवज में ज्यादा पैसे मिलते हैं, लगभग 4 घंटे के पैसे मिलते हैं और वहीं महिलाओं को सिर्फ एक ही घंटे के पैसे मिलते हैं, ज्यादा काम करने के। उन्होंने आगे कहा कि एक और तो हम अपने देश में महिलाओं को देवी का दर्जा देते हैं पर कई जगह पर बिल्कुल इसके विपरीत व्यवहार उनके साथ होता है। आज का दिन हमें यह याद दिलाता है कि हम कैसे उन्हें सम्मान दे सके और उनके आत्म-सम्मान दिला सके ताकि उनका शक्तिकरण हो सके, अपने अधिकार के रक्षा कर सके।

कार्यक्रम का समापन अनौपचारिक संवाद सत्र से हुआ। इस दौरान सहायक निदेशक डॉ. प्रदीप केरकेट्टा एसजे, डीन अकादमिक डॉ. अमर ई. तिग्गा, सभी कार्यक्रमों के प्रमुख, फैकल्टी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

PRESS:LENS EYE NEWS

एक्सआईआईएसएस में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

राची, झारखण्ड | मार्च | 08, 2025 ::
ज़ेवियर इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल सर्विस (एक्सआईएसएस), रांची में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च को फ़ादर माइकल वैन डेन बोगार्ट एसजे ऑडिटोरियम में मनाया गया। इस वर्ष कार्यक्रम का थीम "सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए: अधिकार। समानता। सशक्तिकरण।"

संस्थान के निदेशक डॉ जोसेफ मारियनुस कुजूर एसजे उपस्थित सभी को संबोधित करते हुए कहा कि कई बार ऐसा होता है कि हमारी माताएं, बहने, बेटिया और बीवियां जो घर में चूल्हा-चौका, बच्चों की देखरेख आदि करती हैं वह खुद मानती हैं कि मैं हाउसवाइफ हूं और मैं कुछ नहीं करती। क्योंकि वह कमाऊ नहीं है, वह बाहर जाकर काम नहीं करती। फादर ने आगे अपने संबोधन में बताया कि एक अध्ययन के अनुसार पुरुष औसतन जो एक दिन में काम करते हैं, महिलाएं उनसे प्रतिदिन एक घंटे ज्यादा काम करती हैं। लेकिन पुरुषों को कम काम करने के एवज में ज्यादा पैसे मिलते हैं, लगभग 4 घंटे के

घंटे ज्यादा काम करती हैं। लेकिन पुरुषों को कम काम करने के एवज में ज्यादा पैसे मिलते हैं, लगभग 4 घंटे के पैसे मिलते हैं और वहीं महिलाओं को सिर्फ एक ही घंटे के पैसे मिलते हैं, ज्यादा काम करने के। उन्होंने आगे कहा कि एक और तो हम अपने देश में महिलाओं को देवी का दर्जा देते हैं पर कई जगह पर बिल्कुल इसके विपरीत व्यवहार उनके साथ होता है। आज का दिन हमें यह याद दिलाता है कि हम कैसे उन्हें सम्मान दे सके और

उनके आत्म-सम्मान दिला सके ताकि उनका शक्तिकरण हो सके, अपने अधिकार के रक्षा कर सके।
कार्यक्रम का समापन अनौपचारिक संवाद सत्र से हुआ। इस दौरान सहायक निदेशक डॉ. प्रदीप केरकेट्टा एसजे, डीन अकादमिक डॉ. अमर ई. तिग्गा, सभी कार्यक्रमों के प्रमुख, फैकल्टी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

PRESS:NEWSROOM